1

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

बी० ए० इतिहास Part-I, Paper-I

डॉ० मिथिलेश कुमार
सहायक प्रोफेसर इतिहास
जे० एम० एस० कॉलेज, मुंगेर

प्रत्येक देश का इतिहास भावी पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक धरोहर होता है। अपने पूर्वजों के महान कार्य से भावी पीढ़ियां प्रेरणा प्राप्त करती है। प्रत्येक समाज अपने अतीत से जुड़ा रहना चाहता है। अत: प्रत्येक समाज उक्त अतीत के आधार पर महान भविष्य के निर्माण की योजना बनाता है। भारत की सभ्यता विश्व की प्राचीन सभ्यता में से एक है। भारतवासियों ने जीवन के प्रत्येक पहलू पर विचार किया और लेखन-कला में पारंगत होने के कारण उन्होंने काव्य, दर्शन, कला विज्ञान व अन्य विषयों पर श्रेष्ठ ग्रंथों की रचना की।

हम जानते हैं कि इतिहास विषय के अध्ययन के लिए पूर्णत: स्रोतों पर निर्भर रहते हैं। इसलिए भारतीय तथा विदेशी विद्वानों / इतिहासकारों ने कठिन परिश्रम से प्राचीन भारत के इतिहास की बिखरी कड़ियों को जोड़ने का प्रयास किया। प्राचीन भारत के इतिहास की खोज का कार्य अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रारंभ हुआ। मैक्समूलर ने वेदों का अंग्रेजी में अनुवाद किया, जिससे भारतीय सभ्यता की श्रेष्ठता सम्पूर्ण पाश्चात्य जगत पर स्थापित हुई। इसके पश्चात अनेक अंग्रेजी विद्वानों ने भगवदगीता, हितोपदेश, पंचतंत्र व शकुन्तला जैसे उत्कृष्ट रचना का अंग्रेजी

Scanned with CamScanner

2

में अनुवाद किया।

प्राचीन भारतीय इतिहास के मुख्य स्रोत :→

प्राचीन भारतीय इतिहास के प्रमुख स्रोतों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है :-

(1) पुरातात्विक स्रोत (Archaeological Sources)
(2) साहित्यिक स्रोत (Literary Sources)
(3) विदेशी यात्रियों के वृत्तांत

(1) पुरातात्विक स्रोत :-

प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन में पुरातत्व सम्बन्धी साक्ष्य महत्वपूर्ण है। वास्तव में वैज्ञानिक इतिहास लेखन में पुरातत्व सामग्री ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जहाँ साहित्यिक सामग्री मौन है या अस्पष्ट है वहाँ पुरातत्व सामग्री सहायक होती है। प्रागैतिहासिक काल मुख्य रूप से पुरातात्विक स्रोत पर ही निर्भर है। इसे हम चार भागों में विभाजित कर सकते हैं।

(i) खुदाई (Excavation) से प्राप्त सामग्री।
(ii) अभिलेख (Epigraphs OR inscriptions)
(iii) स्मारक (Monuments)
(iv) मुद्राएँ (coins)

(i) खुदाई से प्राप्त सामग्री :→

भारत के विभिन्न क्षेत्रों के खुदाई से अति प्राचीन कालीन

3

नगरों, भवनों, मन्दिरों, किलों इत्यादि के खंडहर प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुई है। मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की खुदाई में नगर, भवन, मनुष्य शरीर के अवशेष, पशुओं के अवशेष, देवी- देवताओं की मूर्तियाँ, बर्तन, औजार, स्नानागार आदि अनेक वस्तुएं प्राप्त हुई। साँची तथा सारनाथ में प्राप्त अवशेष से बौद्ध धर्म का पता चलता है।

(ii) अभिलेख :→

प्राचीन भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में अभिलेखों का विशेष महत्व है। सर्वाधिक विश्वसनीय स्रोत अभिलेख ही है। अभिलेख पत्थर की शिलाओं, स्तम्भों, ताम्रपत्रों, मूर्तियों, गुहाओं व भवनों की दीवारों पर खुदे हुए हैं। इन अभिलेखों में अनेक भाषाओं का प्रयोग किया गया है। इसकी भाषा ब्राह्मी, संस्कृत, पाली, तमिल, तेलगू आदि है। अभिलेख को हम चार भागों में गुहालेख, शिलालेख, स्तम्भलेख तथा ताम्रपत्र लेख में बाँट सकते हैं। अभिलेखों में अशोक का अभिलेख, समुद्रगुप्त के प्रयागप्रशस्ति आदि महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से तात्कालीन भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक व धार्मिक अवस्थाओं की जानकारी प्राप्त होती है।

Scanned with CamScanner

(iii) स्मारक :→

स्मारकों के द्वारा प्राचीन भारत के सांस्कृतिक व धार्मिक जीवन का ज्ञान प्राप्त होता है। इन स्मारकों में भवन, मूर्तियों, कलाकृतियों, स्तूप, मठ, विहार, चैत्य, मन्दिरों तथा चित्रकारी आदि को सम्मिलित किया जा सकता है। स्मारकों में प्रमुख स्मारक - सारनाथ, पाटलिपुत्र, राजगीर, नालंदा, तक्षशिला हड़प्पा व मोहनजोदड़ो में विद्यमान हैं।

(iv) मुद्राएँ :→

प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन में मुद्राओं, सिक्कों व मोहरों का अत्यधिक महत्व है। भारतीय मुद्राओं पर देवताओं के चित्र, राजाओं के चित्र तथा तिथि अंकित है। समुद्रगुप्त के सिक्कों पर अश्वमेध पराक्रम शब्द अंकित है। अधिकांश मुद्राएँ सोने, चाँदी व ताँम्बे के बने हैं। इससे तत्कालीन आर्थिक स्थिति का अनुमान लगाना सरल हो जाता है।

(2) साहित्यिक स्रोत :→

इसे हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं।

(क) धार्मिक साहित्य (ख) गैर धार्मिक साहित्य

(क) धार्मिक साहित्य :→

धार्मिक साहित्य से तात्कालीन सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक व राजनीतिक परिस्थितियों की जानकारी मिलती

Scanned with CamScanner

लिखा इसमें मौर्य साम्राज्य का वर्णन है। सरियन, स्ट्रैबो, जस्टिन का विवरण भी महत्वपूर्ण है। टॉलमी ने भारत के भूगोल तथा प्लिनी ने नेचुरल हिस्ट्री में पशुओं व वनस्पति का वर्णन किया है। चीनी यात्रियों में फाहियान, ह्वेनसांग तथा इत्सिंग है। सुलेमान, अलबरूनी का वृतांत भी महत्वपूर्ण है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत के लिए वर्तमान समय के इतिहासकारो को अध्ययन के लिए पर्याप्त स्रोत है। इससे हम भारतीय इतिहास का क्रमबद्ध अध्ययन कर सकते है।

—x—

Dr. Mithilesh Kumar
Assistant Professor
Dept. of History
J.M.S. College, Munger.